शोध - सारांश

प्रत्येक साहित्यकार अपने युग के मूल्यों से जूझता हुआ शाश्वत मूल्यों की ओर उन्मुख होता है , इस जूझने की प्रक्रिया में ही टूटने के बावजूद अपने रचनात्मक अभिव्यक्ति की सार्थकता से वह अपनी अस्मिता को बचा पाने में कितना सफल होता है , यही उसके लेखन की सार्थक पहचान भी हो जाती है और उसकी रचना की सफलता भी प्रस्तुत करती है। आधुनिक बोध की नई चेतना का अर्थ ही यह है की वह अपने 'स्व' के परायेपन पर विजय प्राप्त करे और आत्म-संघर्ष के माध्यम से सामाजिक उत्पीड़न से मुक्त हो । जहाँ परिवेश आधुनिक है वहाँ व्यक्ति विचारों से आधुनिक हो आवश्यक नहीं है। वही रूढ़िगत परिवेश में हर व्यक्ति अपने समकालीन विचार से सहमत हो ज़रूरी नहीं । ऐसे ही हिंदी एवं मैथिली में अपने प्रखर रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए आलोचनात्मक जगत में विवादास्पद व्यक्तित्व राजकमल चौधरी की कहानियाँ उस परिवेश को उजागर करती है जहाँ खंडित व्यक्ति अथवा व्यक्तित्व के अलग-अलग अंशो और आदर्शो की अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया गया जो परिवेश के प्रति जागरूक बनाती है, साथ ही उसके वर्तमान संदर्भों के विकल्प चयन में बौद्धिक क्षमता की उपस्थिति को उजागर करती है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में आधुनिकता के आशय विशेष सन्दर्भ राजकमल चौधरी की मैथिली कहानियां को ध्यान में रखते हुए अनुसन्धान को चार अध्यायों में बांटा गया है । आधुनिकता: अवधारणा एवं महत्त्व के अंतर्गत वर्तमान में अतीत के जड़ विचारों का त्याग कर एक नई शुरुआत का पक्ष लेना और ऐतिहासिक मूल्य की पुनर्व्याख्या करना। इस अध्याय में आधुनिक दृष्टिकोण द्वारा जब साहित्य मनुष्य के वृहतर सुख-दुःख के साथ पहली बार जुड़ा था उसके महत्व को उजागर किया गया है । आधुनिक

समझ समाज को विवेक और बुद्धि की महत्वपूर्ण दृष्टि देती है वहीं यह प्रश्न भी उठाया गया कि आधुनिकता क्या है ? यह शब्द आज भी सार्थक अर्थ की तलाश में है। क्या रचनाकार अपने समस्त रचनागत अभिव्यक्ति में मुखर है या फिर उसकी अभिव्यक्ति सामाजिक मान्यताओं से प्रभावित भी होती है ?

उनके व्यक्तित्व परिचय को समझने के लिए उनके परिवेश को उकेरा गया है. मिथिलांचल के परिवेश में बने राजकमल चौधरी के व्यक्तित्व ने यथार्थ को अपने सामने घटित होते हुए देखा और उसे भोगा भी, जीवन के बदलते मूल्य परिवर्तन के कारण इनकी कहानियों ने आदर्शवाद, मर्यादाएं जैसी मान्यताओं के आगे प्रश्नचिन्ह लगा दिया, इस प्रवृत्ति के द्वारा जीवन के बहुविध प्रसंग को उन्होंने अपनी कहानियों की विषयवस्तु बनाया । इस पर चर्चा करते हुए उनके रचनात्मक-व्यक्तित्व परिचय जो रचना के संदर्भ में मानती है कि स्वानुभूति और सहानुभूति, आपबीती और जगबीती कल्पना के साथ बिनकर मन में जो अल्पना बनाते वही साहित्य है, की विशेषता को उभारा है।

मैथिली पत्र-पत्रिकाओं द्वारा कथा-साहित्य के समृद्धि पर भी चर्चा की गयी। मैथिली कहानी के विकास में आने वाले मुख्य रचनाकारों में से हरिमोहन झा, उपेन्द्रनाथ झा, मणिपद्म, ललित, मयानंद मिश्र, रमाकांत झा, गंगेश गुंजन, उषा किरण खान के योगदान के महत्त्व को अंकित करते हुए विशेष रूप से राजकमल चौधरी के मैथिली कहानियों के विकास के योगदान को अंकित किया गया।

इनकी कहानियों की विशेषता का मुख्य कारण लेखक का जनसरोकार है जो समाज में मूलभूत आवश्यकताओं के द्वन्द की गाँठ को खोल कर मर्म को उजागर करने की कोशिश करता है, कहीं-कहीं इनके इस प्रयास के आगे प्रश्नचिन्ह भी खड़ा होता है। वहीं कथ्य के साथ भाषा और शिल्प का व्यवहार भी इनकी विशेषता है। कथा का

अचानक कहीं से शुरू हो जाना और कहीं अचानक ख़त्म हो जाना ,मानो एक चलचित्र मानस में कई भिन्न-भिन्न ध्वनियों के संगीत से रमी हुई दृश्य लिए हो। शिल्प की विविधता ही उनकी कहानियों को अन्य से भिन्न करती है। उस दौर में शिल्प का यह आकर्षण भारतीय भाषा के कथाकारो में मुश्किल था ,जो राजकमल चौधरी की कहानियों में देखा गया । साथ ही उनके समस्त कहानियों का आलोचनात्मक अवलोकन किया जहाँ उनकी रचनाएँ तत्कालीन समाज के यथार्थ को कथा का विषय बनाते हुए उन मूल्यों पर फिर से विचार करने एवं प्रासंगिकता की माँग करती है जिनसे सभी सामाजिक रचनाएँ गतिशील होती हैं।